उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन

27

डा. रेखा राणा*

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च माध्यामिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा की तुलना करने के उद्देश्य से किया गया। न्यादर्श के रूप में मेरठ जिले में स्थित माध्यामिक विद्यालयों से 200 छात्र–छात्राओं का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया 'व्यावसायिक आकांक्षा मापनी' (जे. एस. ग्रेवाल निर्मित) का प्रयोग प्रदत्तों के एकत्रीकरण हेतू किया गया। समूहों की तुलना करने के लिये सांख्यिकीय प्रविधि 'मध्यमान', 'मानक विचलन' एवं 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया। कि प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ शहरी छात्र व छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर ग्रामीण छात्र व छात्राओं की तुलना में उच्च है।

प्रस्तावना

वर्तमान समय में किसी भी राष्ट्र की सर्वोन्मुखी उन्नति एवं विकास हेतू शिक्षा एकमात्र साधन है जो वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन को भी समान रूप से प्रभावित करती है। शिक्षा समाजीकरण की प्रक्रिया का सबसे प्रमुख घटक होने के साथ–साथ माननीय मूल्यों को नवीन पीढ़ी तक हस्तांतरित करने, जीवन की सभी समस्याओं के सर्वोत्तम हल खोजने एवं जीवकोपार्जन हेतू योग्य बनाने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।

अतीत में मानव जीवन न्यून आवश्यकतायें होने के कारण सरल था। धीरे–धीरे सभ्यता के विकास के साथ–साथ समाज की आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक एवं अन्य परिस्थितियों में परिवर्तन होने लगा। जीवन में आवश्यकतायें बढ़ने के साथ–साथ जटिलतायें भी बढ़ने लगी एवं वर्तमान युग में वैश्वीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण जैसी परिस्थितियां दृष्टिगोचर होने के बाद खुली आर्थिक नीतियाँ अपनायी जाने लगी जिसका प्रभाव शिक्षा पर नवीन व्यवसायों से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों को अपनाये जाने के रूप में दिखाई देना प्रारम्भ हो गया। विद्यार्थियों के सामने पुराने समय की अपेक्षा अनेक विकल्प उपस्थित हो रहे हैं।

व्यवसाय की भूमिका व्यक्ति के जीवन में व्यक्ति सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से अत्याधिक महत्वपूर्ण है। मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिये व्यक्ति को अपनी रूचियों, आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं क्षमताओं के अनुरूप व्यवसाय का चुनाव करना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये अपनी आवश्यकता एवं रूचियों के अनुसार व्यवसाय में संलग्न होना अत्यंन्त महत्वपूर्ण है। व्यक्ति की व्यावसायिक आकांक्षा, रूचि, जीवनशैली, व क्षमतायें, सामाजिक आर्थिक स्थिति, व्यवसायों की बढ़ती संख्या इत्यादि तत्व,

*शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ

उसके व्यवसाय चयन को प्रभावित करते हैं। कतिमय कारणों से व्यक्ति को जो भी व्यवसाय मिलता है। उसे ही अपना लेता है। भले ही वह उसकी आकांक्षा, योग्यता या रूचि के अनुरूप न हो। किन्तु भविष्य में वह उस व्यवसाय तथा स्वंय के साथ न्याय नहीं कर पाता जिस कारण वह अपनी क्षमताओं का उपयोग करने में असफल रहता है। साथ ही परिवार एवं राष्ट्र के संसाधनों की हानि भी होती है। उदाहरण स्वरूप यदि किसी व्यक्ति की रूचि शिक्षण में है तो वह एक उत्कृष्ट अधिवक्ता या चिकित्सक नहीं बन सकता। यदि किसी कारणवश कोई अरूचिकर व्यवसाय चुन लिया जाये तो यह उसके लिये जीवनभर दण्ड–स्वरूप होगा।

किशोरों पर हुये शोध अध्ययन में पाया गया कि शहरी विद्यार्थियों का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में उच्च होता है। एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर छात्रों की तुलना में उच्च होता है। सुन्दराजन एवं राजशेखर (1980) सारस्वत (1988) के शोध निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि महिला/पुरूष एवं शहरी/ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी छात्र एवं छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।
5. उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शहरी छात्रों और शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. ग्रामीण छात्रों और ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. ग्रामीण छात्रों और शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. ग्रामीण छात्राओं और शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका – 1

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों एवं शहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का विवरण

समूह	प्रतिदर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	'टी' मान "T"
ग्रामीण विद्यार्थी	100	46.37	9.47	3.61
शहरी विद्यार्थी	100	53.31	16.75	

t 0.05 = 1.97, t .01=2.60

तालिका – 2

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का विवरण

समूह	प्रतिदर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	'टी' मान "T"
शहरी छात्र	50	58.36	26.25	2.58
शहरी छात्राएँ	50	48.26	8.77	

t .05 = 1.98, t .01=2.63

तालिका – 3

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का विवरण

समूह	प्रतिदर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	'टी' मान "T"
ग्रामीण छात्र	50	48.60	8.28	2.43
ग्रामीण छात्राएँ	50	44.14	10.04	

t .05 = 1.98, t .01=2.63

तालिका – 4

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का विवरण

समूह	प्रतिदर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	'टी' मान "T"
ग्रामीण छात्र	50	48.60	8.28	2.50
शहरी छात्र	50	58.36	26.25	

t .05 = 1.98, t .01=2.63

तालिका – 5

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण छात्राओं एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षण का विवरण

समूह	प्रतिदर्श संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D)	'टी' मान "T"
ग्रामीण छात्राएँ	50	44.14	10.04	2.19
शहरी छात्राएँ	50	48.26	8.77	

t .05 = 1.98, t .01=2.63

निष्कर्ष

अध्ययन के फलस्वरूप पाया गया कि शहरी छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की तुलना में अधिक पायी जाती है।

शहरी विद्यार्थियों की उच्च व्यावसायिक आकांक्षा का सम्भावित कारण यह हो सकता है कि उन्हें वहाँ पर अच्छा शैक्षिक वातावरण प्राप्त होता है तथा उन्हें सही निर्देशन व परामर्श मिलता रहता है दूसरा कारण यह हो सकता है कि उन्हें ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक शैक्षिक अवसर प्राप्त होते हैं। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा की तुलना में अधिक होती है।

इसका सम्बन्धित कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों के माता–पिता कम शिक्षित होने के कारण वे लड़कों तथा लड़कियों में भेदभाव करते है और ग्रामीण छात्राओं को विषय के चयन में पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान नहीं करते है।

अध्ययन के फलस्वरूप पाया गया कि शहरी छात्राओं की तुलना में शहरी छात्रों में व्यावसायिक आकांक्षा अधिक पायी जाती है।

शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा, शहरी छात्राओं की अपेक्षा अधिक होने का सम्भावित कारण यह हो सकता है कि अभिभावक लड़कियों की तुलना में लड़कों को व्यावसायिक विषयों को चुनने में अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं।

अध्ययन के फलस्वरूप पाया गया कि ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा की तुलना में शहरी छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा अधिक पायी जाती है। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि शहरी छात्रों के माता–पिता का शिक्षित होना, शिक्षित वातावरण तथा शैक्षिक विषयों के चयन में पूर्ण स्वतंत्रता मिलना है।

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि शहरी छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षाओं से अधिक होती है।

इसका सम्भावित कारण यह है कि शहरी छात्राओं के माता–पिता उन्हें व्यावसायिक विषयों के चयन में अधिक स्वतन्त्रता प्रदान करते हैं जबकि ग्रामीण छात्रायें अपने माता–पिता के अनुसार शैक्षिक विषयों का चयन करती है।

सन्दर्भ

1. Grewal, J.S. (1973). Manual of Occupational Aspiration Scale, National Psychological Corporation: Agra.
2. कटियार, (1990) माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का उनके प्रजातान्त्रिक मूल्यों, जातिप्रथा एवं शिक्षा के सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पी.एच.डी भीमराव अम्बेडकर वि0वि0 आगरा.
3. Mohan & Gupta (1990). Factors related to choice of Vocational course, Fifth Survey of Educational Research, Vol 11, New Delhi, NCERT, & 1520.
4. Sundarajan, S & Rajshekhar, S (1988). Professional aspiration of higher secondary students, Channai: Madras University
5. सक्सेना, पी. (2003) +2 स्तर पर अध्ययनरत सामान्य एवं विशिष्ट किशोर–किशोरियों की व्यावसायिक अभिरूचि का उनकी सामाजिक स्थिति, अभिभावकों की आय एवं उपलब्धि के सम्बन्ध में एक अध्ययन पी.एच.डी, भीमराव अम्बेडकर वि0वि0 आगरा।
6. सुखिया, एस. पी. विद्यालय प्रशासन एवं संगठन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा